सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियाँ (Systematically Misleading Expression) गिल्बर्ट राइल ने दर्शन के अन्तर्गत ऐसे अनेक गलत सिद्धान्तों एवं अभिव्यक्तियों को स्पष्ट करने के लिए 1932 में इस लेख को प्रकाशित किया था। उनका कहना था कि दर्शन का प्राथमिक कार्य कुछ ऐसी अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करता है जो सुनियोजित ढँग से दार्शनिकों को ऐसा प्रतीत करवाती हैं कि वे किसी तथ्य को स्पष्ट करती हैं परन्तु स्थिति यह है कि ऐसे सिद्धान्त भ्रमोत्पादक हैं। व्याकरणीय संरचना एवं तार्किक संरचना के बीच इस प्रकार के सिद्धान्त परम्परागत रूप से भ्रान्ति उत्पन्न करते हैं। ऐसे सिद्धान्तों के प्रतिपादक जब किसी विशिष्ट तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उसकी सैद्धान्तिक व्याख्या करते हैं उस समय वे यह नहीं जान पाते कि वास्तव में उनके द्वारा प्रदत्त व्याख्या उस कोटि में आती ही नहीं है जिसकी व्याख्या वे करना चाहते हैं। कई बार अर्थ को स्पष्ट करने के उद्देश्य से दार्शनिक यह जानने की चेष्टा करते हैं कि

• A language is a corpus of teachable things. Ryle. Collected papers. use uses and meaning. p. 407.

Roughly. as Capital stands to Trade so language stands to speech p. 407.

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

किसी विशेष वाक्यांश का क्या तात्पर्य है। जब वे इसके अर्थ को स्पष्ट करते हैं तो वे उस वाक्यांश में प्रयुक्त ही नहीं होते हैं। अतः राइल ऐसी अभिव्यक्तियों को सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति कहते हैं। इस प्रकार की अभिव्यक्तियों को उन्होंने न तो मिथ्या माना और न ही अर्थशून्य यदि ये मिथ्या होती या अर्थ शून्य होती तो निश्चित रूप से इस प्रकार की अभिव्यक्तियों से दार्शनिक भ्रमित नहीं होते। राइल के अनुसार 'अमुक-अमुक कहने का तात्पर्य है' इसे यदि सम्पूर्ण रूप से नहीं तो आंशिक रूप से बड़े पैमाने में इस समस्या को दार्शनिक युक्तियों के अन्तर्गत स्थान दिया जाता है। सामान्यतः यह देखा गया है कि सामान्य भाषण या ऐसे प्रवचन जो दार्शनिक व्याख्या नहीं होते हैं उनके लिए भी कुछ निश्चित अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं। दार्शनिक कुछ इस प्रकार की अभिव्यक्तियों के संबंध में या करीब सभी निश्चित प्रकार की अभिव्यक्तियों के संबंध में प्रश्न पूछते हैं यह भी प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि 'इसका क्या' तात्पर्य है? कभी-कभी दार्शनिक यह दावा भी करते हैं कि वे उन 'अवधारणाओं' का जो सामान्य व्यक्ति या वैज्ञानिक, इतिहासविद्, कलाकार या अन्य सभी के 'निर्णय' में रहता है, उसका विश्लेषण या स्पष्टीकरण करते हैं। परन्तु जो वाक्य या लेखन में सामान्य पद होते हैं उनके अर्थ को जानना एक प्रलाप सा प्रतीत होता है। राइल कहते हैं कि "X" एक अवधारणा है एवं 'y' एक निर्णय हैं, यह अपने आप में सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति है। यद्यपि इसे प्रमाणित करने की सम्पूर्ण कार्य-प्रणाली एक अनूठा प्रयास है फिर भी इसे प्रमाणित करना दार्शनिक भ्रान्तियों को दूर करने के लिए आवश्यक है। जिसे विचार के लिए प्रस्तुत किया जाता है या जो विचारधीन है उसका प्रयोग बौद्धिक रूप से किया जाता है उनको प्रस्तुत करने वाले उसके तात्पर्य से अवगत रहते हैं। इसके पूर्व कि वे क्या कह रहे हैं किसी दार्शनिक उपदेशों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रस्तुतकर्त्ता इसे जानते हैं कि इससे उनका क्या तात्पर्य है। यदि श्रोता जिनके लिए प्रस्तुत किया गया है इसे समझते हैं तो यहाँ इसे दार्शनिक रूप से विश्लेषित या स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है। कम से कम दार्शनिकों को अभिव्यक्तियों का क्या तात्पर्य है इसे स्वयं ही जानना चाहिए क्योंकि जब तक वह इसे नहीं जानेगा कि इसका क्या तात्पर्य है तो वह इसका विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण भी नहीं कर पाएगा।

निश्चित रूप से अनेक बार अनेक परिस्थितियों में अभिव्यक्तियाँ बौद्धिक रूप से प्रयुक्त नहीं होती हैं। ऐसी स्थिति में राइल कहते हैं कि उनके लेखक केवल तोते जैसे उसे बड़बड़ाते हैं। परन्तु इस स्थिति में यह पूछना स्पष्टतः निष्फल होगा कि वास्तव में अभिव्यक्तियों का क्या तात्पर्य है? वे अर्थपूर्ण है इसे स्वीकार करने के लिए भी ऐसी अवस्था में कोई तर्कणा नहीं रह जाती है। यदि किसी भी प्रकार से तर्कणा की गुंजाइश हो तो उसे बड़बड़ाना नहीं कहा जा सकता है। यदि दार्शनिक यह पूछते हैं कि यदि ये अभिव्यक्तियाँ बौद्धिक व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त की गई हैं तो इसका

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

क्या तात्पर्य होगा। इसका केवल यही उत्तर हो सकता है कि इसका वहीं अर्थ होगा जो इसका अर्थ था। ऐसी स्थिति में इसे दार्शनिक रूप से प्रस्तुत करने से कोई मदद नहीं मिलेगी। वास्तव में वस्तुस्थिति यह है कि जब तक दार्शनिक इसे सामान्य तरीके से नहीं समझेगा तो कुछ भी प्रारम्भ करने में असमर्थ है। राइल कहते हैं कि तब ऐसा लगता है कि यदि अभिव्यक्ति को उसका क्या तात्पर्य है इस रूप में समझा जाता है कि वह ज्ञात है। अतः जहाँ कोई अन्धकार नहीं है वहाँ प्रकाश की न आवश्यकता है और न उसे लाना संभव है। राइल कहते हैं कि यदि यह सुझाव दिया जाता है कि अ-दार्शनिक लेखक किसी ऐसी अभिव्यक्ति को जो सामान्य व्यक्ति वैज्ञानिक, धर्म प्रचारक या कलाकार द्वारा प्रस्तुत की गयी हो, उसे अस्पष्ट रूप से धुँधले या भ्रामक रूप से जानता है, परन्तु दार्शनिक अपने परीक्षण के द्वारा अभिव्यक्ति का क्या तात्पर्य है इसे स्पष्टतः एवं परिस्पष्टः जानता है तो अनिवार्यतः यह दो परत उत्तर लगता है। प्रथम, यदि कोई वक्ता केवल भ्रामक रूप से अभिव्यक्ति के तात्पर्य को जानता है तो वह केवल उसे बड़बड़ाता है। इस प्रकार के प्रवाह के लिए दवाई का प्रबंध करना न तो दर्शन का कार्य है और न ही इसे कोई उपलब्धि माना ज़ा सकता है। द्वितीय, दार्शनिक कोई पदेन (ex-officio) नहीं है जिनका प्रलाप एवं असंबंध से संबंध हो। दार्शनिक उन रोचक अभिव्यक्तियों का अध्ययन करता है जिसका प्रयोग बौद्धिक रूप से किया गया हो। उसका संबंध शोर या किसी मूर्ख या तोते के समान नकल की गयी अभिव्यक्तियों से नहीं है। राइल कहते हैं कि कई स्थितियों में जैसे (1) जब किसी अभिव्यक्ति में अंग्रेजी या लेटिन व्याकरण का उल्लंघन किया गया हो, (2) कोई शब्द विदेशी शब्द हो सकता है या विश्लेष्य शब्द या तकनीकी परिभाषित शब्द या आयात किया पद हो जिसके लिए परिचित पर्यायवाची का प्रयोग किया जा सकता हो, (3) कोई वाक्यांश या वाक्य अपने संरचना में अपरिचित या बेतुका हो, (4) शब्द या वाक्यांश समानार्थी एवं संभव थमक के यंत्र हो सकते हैं, (5) ऐसा भी हो सकता है कि शब्द या वाक्यांश का गलत चयन किया गया हो जैसे, जहाँ विशिष्ट वाक्य का प्रयोग होना चाहिए वहाँ सामान्य का प्रयोग हुआ हो या जहाँ संकेत अज्ञात या अस्पष्ट हो वहाँ संकेतिक शब्द का प्रयोग हुआ हो, (6) शब्द हास्यास्पद या अयथार्थ हो। परन्तु इनके लिए अभिव्यक्तियों का प्रतिस्थापन या इसका भावानुवाद, व्याख्या करना भाषाशास्त्रीय कार्य हो सकता है, इसे दर्शन का कार्य नहीं माना जा सकता है। यदि ऐसा है तब 'हमें' इस प्रश्न का सामना करना पड़ता है कि क्या ऐसा कुछ हैं जैसे विश्लेषण या स्पष्टीकरण जिससे अभिव्यक्तियों के अर्थ जो लोगों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं भाषाशास्त्रीय निम्नतम अभिव्यक्ति के स्थान पर भाषाशास्त्रीय रूप से उत्तम को प्रतिस्थापन किया जा सके? राइल कहते हैं कि प्रस्तुत लेख की विषय-वस्तु यह दिखाना नहीं है कि सामान्यतः दर्शन क्या खोज रहा है अपितु यह दिखाना है कि दर्शन को एक बहुत महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान देना चाहिए कि वास्तव में अभिव्यक्तियाँ अर्थपूर्ण हैं या नहीं।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

सारांश में राइल इसी विचारधारा को इस लेख के अन्तर्गत स्पष्ट करते हैं। उन्होंने 'अभिव्यक्ति' का प्रयोग एकल शब्द, वाक्यांशों एवं वाक्यों के लिए किया है। कथन से तात्पर्य है जो निदेशित करें। राइल कहते हैं कि जब हम कथन को 'सुनियोजित भ्रमोत्पादक' कहते हैं तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे मिथ्या हैं एवं निश्चित रूप से वे निरर्थक भी नहीं है। सुनियोजित से तात्पर्य उन सभी अभिव्यक्तियों से है जो व्याकरणीय आकार के कारण एक ही तरीके से एक ही कारण से भ्रमोत्पादक होते हैं।

I सत्तामूलकवत् कथन (Quasi-ontological Statement)

कान्ट के पश्चात प्रायः सभी यह स्वीकार करते हैं 'सत्ता कोई गुण नहीं है' एवं इसके आधार पर तथाकथित प्रतिपत्ति सत्तामूलक युक्ति का परिहार किया जाता है। 'ईश्वर पूर्ण है', पूर्ण होना अस्तित्व में होने को प्रतिपन्न करता है। अतः ईश्वर का अस्तित्व है।' यदि अस्तित्व गुण नहीं है तो इसे इस प्रकार की वस्तु के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है जिसका गुण से प्रतिपन्न हो सके। परन्तु इस ओर ध्यान नहीं दिया गया था कि यदि 'ईश्वर अस्तित्ववान है' में अस्तित्व यह विधेय नहीं है। (व्याकरण को छोड़कर Save Grammer) तो इस कथन में ईश्वर विधेयीकरण का उद्देश्य नहीं हो सकता है (व्याकरण को छोड़कर Save Grammer) यह अनुभूत निषेधात्मक अस्तित्ववान कथन जैसे 'शैतान का अस्तित्व नहीं है' या यूनिकॉर्न अनस्तित्ववान हैं' जैसे कथनों के परीक्षण से आता है। यदि कोई शैतान नहीं है, तब यह कथन शैतान का अस्तित्व नहीं है, शैतान के संबंध में इस प्रकार नहीं हो सकता है जिस प्रकार मेरे बारे में है मैं नींद में हूँ। राइल कहते हैं दार्शनिकों ने सिद्धान्तों के साथ खिलवाड़ किया एवं इसी कारण उन्हें यह कहते रहने का अधिकार मिला कि शैतान अनस्तित्ववान है। फिर भी यह किसी न किसी रूप में जब तक इसके लक्षण, स्वरूप जो यद्यपि गुण नहीं है इसे महत्वपूर्ण माना जाता है एवं शैतान को अस्तित्ववान माना जाता है। इस प्रकार से कोई यह युक्ति प्रस्तुत कर सकता है कि इस प्रकार के कथन शैतान के प्रत्यय का वर्णन करता है। दूसरे इसे प्रस्तुत करते हुए इस प्रकार की युक्ति दे सकते हैं कि इस प्रकार के कथन अवस्थिति के संबंध में हैं परन्तु यह कथन अ-वास्तविक तत्व शैतान के संबंध में कथन प्रस्तुत करने की चेष्टा करते हैं कि कुछ हो सकता है परन्तु उसका अस्तित्व नहीं है। परन्तु यदि इस प्रकार इसे मान लिया जाए तो 'गोलचौकोर का अस्तित्व नहीं है' या 'वास्तविक अभावात्मक तत्व का अस्तित्व नहीं है' जैसे कथन जो निषेधात्मक होते हैं वे या तो अवस्थिति के क्षेत्र में या प्रत्यय के क्षेत्र में आने के लिए बाध्य हो जाएँगे जो आत्म-व्याघाती होगा। अतः राइल कहते हैं कि इस सिद्धान्त का परित्याग करना पड़ेगा एवं अस्तित्व परक प्रतिज्ञप्तियों के लिए एक नये विश्लेषणात्मक पक्ष को प्रारम्भ करना पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

राइल कहते हैं कि मान लीजिए एक सामान्य उद्देश्य के रूप में 'माँसाहारी गायें' वे 'अस्तित्ववान नहीं है एवं इस प्रकार स्वीकार करना सत्य भी होगा। यहाँ वास्तव में मेरे द्वारा किसी माँसाहारी गायों के संबंध कथन नहीं किया जा रहा है कि ऐसा कोई भी नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वास्तव में 'माँसाहारी गायें' इस अभिव्यक्ति का प्रयोग नहीं होता है, यद्यपि व्याकरण की दृष्टि से यह विपरीत प्रतीत होता है। इस प्रकार क्रिया 'अस्तित्व का भी महत्व होता है। अतः व्याकरण की कुंजी का प्रत्याख्यान करना होगा एवं विश्लेषण का प्रयोग कर यह सुझाव देना होगा कि 'माँसाहारी गायों का अस्तित्व नहीं है या 'कोई भी माँसाहारी चौपाये गाय नहीं है।' परन्तु इसमें कुछ और सुधार आवश्यक है। 'एक श्रृंगी घोड़े का अस्तित्व नहीं है' का अर्थ है 'कोई भी ऐसा नहीं है जो चतुष्पदी एवं शाकाहारी एवं एक श्रृंगी दोनों हो।' इसका तात्पर्य यह नहीं होता है कि इससे यह प्रतीत होता है कि कुछ चतुष्पदीय या शाकाहारी जानवर हैं। वैसे 'माँसाहारी गायें अस्तित्वान नहीं है' को भी यह प्रस्तुत करना चाहिए 'कोई भी गाय एवं माँसाहारी दोनों नहीं हैं,' इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह किसी एक के लिए है।

अब यदि स्पष्ट प्रतीत होने वाले एक वचनीय उद्देश्य को लिया जाए जैसे 'ईश्वर अस्तित्ववान है' या शैतान का अस्तित्व नहीं है, और यदि पूर्व में प्रस्तुत किया गया विश्लेषण सही है तो यहाँ भी 'ईश्वर एवं शैतान' बजाए व्याकरणीय आभास के विधेयात्मक अभिव्यक्ति है। 'ईश्वर का अस्तित्व है' का तात्पर्य वहीं होना चाहिए जो 'कुछ वस्तु एवं केवल एक वस्तु सर्वत्र है, जो सर्वदा एवं असीम शुभ है एवं 'शैतान का अस्तित्व नहीं है' का अर्थ होना चाहिए जो कोई भी वस्तु दोनों पैशाचिक एवं अकेला पैशाचिक नहीं है, या शायद 'कोई भी वस्तु ऐसी है जो पैशाचिक हो एवं शैतान कहा जाए दोनों नहीं हो सकता है या 'शैतान' किसी वस्तु के लिए व्यक्तिवाचक नाम नहीं है।' मोटे तौर पर इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है, 'X' अस्तित्ववान है' X' अस्तित्ववान नहीं है न तो स्वीकार करते हैं और न ही अस्वीकार करते हैं कि प्रदत्त गुण का उद्देश्य 'X' में गुण विद्यमान है, परन्तु यह स्वीकार या अस्वीकार करते हैं कि 'X' के गुण का होना या 'X' होना किसी वस्तु का कथन या नामकरण करना नहीं है।

राइल कहते हैं कि इसके बाद यह कहा जा सकता है कि 'माँसाहारी गायें अस्तित्ववान नहीं है' यह अभिव्यक्ति सुनियोजित भ्रमोत्पादक हैं एवं वह अभिव्यक्ति जिसके आधार पर इसकी व्याख्या की गई है वह सम अनुपात में सुनियोजित भ्रमोत्पादक नहीं है। परन्तु वे न तो मिथ्या हैं और न ही वे तात्पर्यहीन हैं। वे सत्य हैं एवं वही तात्पर्य रखते हैं जो उनकी कम सुनियोजित भ्रमोत्पादक व्याख्या का अर्थ हैं राइल कहते हैं कि '.....' विद्यमान है '.....' एक तत्व है' केवल जाली विधेय है एवं इनमें उद्देश्य के रूप में जिसे माना जाता है वह भी जाली उद्देश्य है। इसी को निम्नलिखित युग्म में दर्शाया जा सकता है। इनमें से कोई भी कथन न तो पिकविक

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

(Piekwick) के संबंध में है और न ही बाल्डविन (Baldwin) के संबंध में है। यदि वे सत्य हैं तो ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसके लिए वे हैं एवं यदि वे गलत हैं तो भी ऐसा कोई जिसके लिए ये हैं। न ही इनमें कोई व्याकरणीय विधेय है और न ही ये किसी वस्तु को विभूषित करते हैं।

श्रीमान वाल्डविन	श्रीमान पिकविक
प्राणी है। is being	एक अतत्व है। is a nonentity
सत या एक सतता है is real or a reality	असत् या अवास्तविक या एक आभास है। is unreal or an unreality or an appearance
वास्तविक तत्व है is genuine entity	जाली एवं शर्मनाक तत्व है। is a bogus or sham entity
द्रव्य है। is a substance	एक द्रव्य नहीं है। is not a substance
एक वास्तविक वस्तु या तत्व है। is an actual object or entity	एक अ वास्तविक वस्तु या तत्व है। is an unreal object or entity
वस्तुनिष्ठ है। is objective	वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ नहीं है। is not objective or is subjective
एक मूर्त वास्तविकता है। is a concrte reality	एक कल्पना या कथा है। is a fiction or figment
एक वस्तु है। is an object	एक काल्पनिक वस्तु है। is an imaginary object
है। is	नहीं है। is not
	केवल प्रव्यय है is mere idea
	अमूर्तीकरण है। is an abstraction
	एक तार्किक संरचना है। is a logical construction.

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

राइल कहते हैं कि इन समस्त सत्तामूलक कथनों जैसे प्रतीत होने वाले (quasi-ontological statement) अभिव्यक्तियों में व्याकरणीय उद्देश्य पद या वाक्यांश कुछ निर्देशित करते हुए प्रतीत होते हैं जिसके लिए सत्तामूलकवत् कथन विधेयीकरण करते हैं। यदि इसे एक शब्द में कहा जाए तो यही कहा जा सकता है कि 'समस्त सत्तामूलकवत् कथन सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियाँ हैं एवं यदि विश्लेषण सही है तो इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि तत्वमीमाँसक दार्शनिकों ने 'वास्तविकता' या 'सत' को जिन्हें वे बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं एवं अपने कथनों में इन्हें उद्देश्य के रूप में मानकर या विधेय के रूप में 'सत' को मानकर बहुत बड़ी गलती की। 'शैतान वास्तविक नहीं है' का व्याकरणीय स्वरूप 'कैपॉन दार्शनिक नहीं है' के सादृश्य प्रतीत होता है। प्रथम कथन में उन गुणों का निषेध किया गया है जिससे किसी को शैतान कहा जाए, वैसे ही दूसरे कथन में कैपॉन में उन गुणों का निषेध किया गया है जिससे उन्हें दार्शनिक कहा जाए। परन्तु इस प्रकार का विश्लेषण या सुझाव गलत है क्योंकि शैतान का जब निषेध किया जाता है तो यह स्पष्ट है कि शैतान कोई व्यक्तिवाचक नाम नहीं है। इसी प्रकार जब यह कहा जाता है कि 'श्रीमान पिकविक एक कल्पना है' यह महत्वपूर्ण रूप से सत्य एवं बौद्धिक है, इस अभिव्यक्ति को एक सुनियोजित भ्रमोत्पादक ही कहा जाएगा। पिकविक का कहीं भी वैसे उल्लेख नहीं है जैसे कि वाल्डविन का एक राजनेता के रूप में प्राप्त होता है। कोई भी इस प्रकार के गुण का विषय नहीं है जिसे निर्देशित करते हुए कहा जाए कि 'वह काल्पनिक है।' पिकविक के संबंध में यह कहा जा सकता है कि एक कथा हैं एवं उसमें पिकविक का चित्रण कुछ इस प्रकार से किया गया है कि उसे 'एक मिथ्या कथनों का मण्डल है' कहा जा सकता है। राइल कहते हैं कि यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'वह तात्पर्य जिससे वत्-सत्तामूलक कथन भ्रमित होते हैं, वे कथन असत्य नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि इसमें प्रयुक्त शब्द अनेकार्थक या अस्पष्ट हैं, केवल इसके बारे में यही कहा जा सकता है कि ये आकारिक रूप से तथ्य के लिए तार्किक आकार के नहीं है एवं उसके लिए उपयुक्त भी नहीं है।

II कथन जो सामान्य के लिए है ऐसा प्रतीत होते हैं, या प्लेटोनिक कथनोवत् (Statement seeming object Universely or quasi-Platonic Statements)

राइल कहते हैं कि सामान्यतः हम लोग ऐसी अभिव्यक्तियों को जैसे 'असमय निष्ठा निन्दनीय है', एवं 'सद्गुण का अपना पुरस्कार है' का बहुत सुगमता से प्रयोग करते हैं, 'स्मिथ ने स्वयं को पुरस्कृत किया' को दार्शनिक स्वीकार कर लेते हैं। दार्शनिक इन चारों कथनों में सादृश्यता को स्वीकार कर इसके परिणामस्वरूप यह मान लेते हैं कि जगत में कम से कम दो प्रकार की वस्तुएँ हैं

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

जिन्हें सार्वभौम एवं विशिष्ट के श्रेणी में रखा जा सकता है जैसे असमय निष्ठा, सद्गुण सार्वभौम है एवं जॉन, स्मिथ विशिष्ट हैं। राइल कहते हैं कि इस प्रकार की मान्यता में बहुत जल्दी ही निरर्थकता प्रवेश करती है। सार्वभौम योग्यता की भर्त्सना के संबंध में कथन करना बेवकूफी है, सार्वभौम की न तो प्रशंसा की जाती है और न ही यह निन्दनीय है, जैसे भूमध्य रेखा में छिद्र नहीं किया जा सकता है। वास्तव में असमय निष्ठा को दोष नहीं दिया जाता है। अपितु वह व्यक्ति जो समय निष्ठा नहीं है उस पर दोषारोपण किया जाता है। पुनः यह भी शाब्दिक रूप से सत्य नहीं है जब यह कहा जाता है कि सद्गुण पुरस्कार प्राप्तकर्ता हैं। सत्य यह है कि जो व्यक्ति सद्गुणी है उसे पुरस्कार प्राप्त होता है। जो उत्तम है, उत्तम होने के कारण कुछ प्राप्त करता है। अतः मौलिक कथन वास्तव में 'सद्गुण के संबंध' में नहीं है अपितु उत्तम व्यक्ति के लिए है। व्याकरणीय उद्देश्य पर 'सद्गुण के संबंध' में नहीं है अपितु उत्तम व्यक्ति के लिए है। व्याकरणीय उद्देश्य पर 'सद्गुण का तात्पर्य जो-- सद्गुणी है का अर्थ है से है। अतः पूर्व में जिसे माना गया वह विधेय पद नहीं है। राइल कहते हैं कि प्लेटोनिक एवं प्रति-प्लेटोनिक मान्यताएँ, जैसे साम्यता, एक तत्व है या नहीं है', भी इसी प्रकार से भ्रामक है। ये वत्-सत्तामूलक कथन एवं वत् प्लेटोनिक दोनों ही प्रकार से भ्रमोत्पादक हैं। राइल के अनुसार यहाँ पर यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि सामान्य व्यक्ति जब इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं तो वे किसी भी प्रकार की दार्शनिक गलती नहीं करते हैं क्योंकि वे इसका दार्शनिक रूप प्रस्तुत नहीं करते।

III वर्णनात्मक अभिव्यक्तियाँ एवं वत्-वर्णन (Descriptive Expressions and quasi Description)

इस विभाग के अंतर्गत राइल वह अमुक एवं अमुक (the-so and so) जैसे उदाहरण के लिए 'वह ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का कुलपति' इस प्रकार की अभिव्यक्तियों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि हम लोग इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का अनवरत प्रयोग करते रहते हैं। कई बार इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग वैयक्तिक का प्रयोग करने के लिए इसे अद्भूत तरीके से निर्देशित करते हैं। ये वाक्यांश जैसे 'ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का (वह) (the) वर्तमान कुलपति' एवं विश्व का (वह (the) सर्वोच्च पर्वत' को एक विशेष संदर्भ में इस प्रकार से लिया जाता है जैसे 'ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का वर्तमान कुलपति लम्बा व्यक्ति है एवं मैंने विश्व का सर्वोच्च (वह (the) पर्वत नहीं देखा है। इनमें ऐसी कोई बात नहीं है जो आन्तरिक रूप से भ्रमित करें, परन्तु जब इस प्रकार के वर्णनात्मक वाक्यांशों का प्रयोग दार्शनिक गलत ढँग से करते हैं तो वह भ्रमोत्पादक होता है। इसमें वह वाक्यांश (the Phrase) भ्रमित करता है। जब तक इसका परीक्षण नहीं किया जायेगा कि किसी प्रकार वास्तविक अद्वितीय वर्णन निर्देशित करता है तब तक

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियों की परीक्षा नहीं की जा सकती है। 'वर्णनात्मक वाक्यांश व्यक्तिवाचक नाम नहीं है। यदि टॉमी, जोनस् का ज्येष्ठ पुत्र है, तो 'ज्येष्ठ पुत्र जोनस का' टॉमी को निर्देशित करता है, इसलिए नहीं कि दूसरे लोग उसे जोनस् का ज्येष्ठ पुत्र कहते हैं अपितु इसलिए कि केवल वह एवं उसके अतिरिक्त ऐसा कोई भी नहीं है जो जोनस् का पुत्र एवं अन्य पुत्रों से ज्येष्ठ दोनों हो सके। वर्णनात्मक वाक्यांश व्यक्तिवाचक नाम नहीं है अपितु एक विधेयात्मक अभिव्यक्ति है जो संयुक्त रूप से जॉनस् का पुत्र एवं ज्येष्ठ पुत्र को अभिव्यक्त करता है। यह टॉमी को केवल इस तात्पर्य से निर्देशित करता है कि टॉमी एवं केवल टॉमी में ये विशेषताएँ वर्तमान हैं। राइल कहते हैं कि 'वाक्यांश का आशय टॉमी के अर्थ से नहीं है। इस प्रकार की मान्यता निरर्थक है। इस सम्पूर्ण कथन में कि 'जॉनस् के ज्येष्ठ पुत्र का आज विवाह है' इसमें टॉमी से जो अर्थ लिया जा सकता है वह इस प्रकार टॉमी जोनस् का पुत्र है, वह जोनस् का ज्येष्ठ पुत्र है एवं उसका विवाह है। यह पूर्ण कथन तब तक सत्य नहीं हो सकता है जब तक इसके तीन या इससे भी अंधिक घटक यदि इस कथन के किये जा सकते हैं वे सभी सत्य न हो।

'वह वाक्यांश' के संदर्भ में राइल कहते हैं कि इस प्रकार की अभिव्यक्ति केवल एक अन्य सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति की ओर ले जाती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इसमें भ्रान्तियाँ हैं पर यह भ्रान्ति वर्णनात्मक अभिव्यक्तियों के दाँव पेंच के कारण नहीं है। राइल कहते हैं कि मोटे तौर पर जिन दोषों को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं वे है वर्णनात्मक वाक्यांश व्यक्तिवाचक नाम है एवं वह वस्तु जिसका वर्णन स्पष्टीकरण करता है वह वर्णन का अर्थ है। इसके पश्चात् उन्होंने कुछ अन्य वर्गों की चर्चा की जिन्हें सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियों के वर्ग में रखा जा सकता है।

IV. सुनियोजित भ्रमोत्पादक वत्-निदेशात्मक 'वह वाक्यांश' (Systematically Misleading quasi-Referential The - Phrases')

1. सामान्य परिचर्चा के अन्तर्गत प्रायः ऐसी अभिव्यक्तियों का समागम हो जाता है जो यद्यपि 'वह वाक्यांश' (the Phase) है एवं अपने व्याकरणीय ढाँचे से वे ऐसे प्रतीत होतें हैं कि वे 'वह वाक्यांश' है परन्तु वे कोई अनूठे प्रकार की परिचर्चा का विषय कभी भी नहीं होते हैं। सामान्य व्यक्ति के लिए जो इन वाक्यांशों का सामान्यीकरण नहीं करते हैं उनके लिए यह भ्रमोत्पादक भी नहीं है। परन्तु दार्शनिकों को इन्हें पुनः स्थापित करना होता है क्योंकि 'वह वाक्यांश' का कई बार के रूप निर्देशात्मक एवं अनिर्देशात्मक दोहरा प्रयोग होता है इसलिए इसके प्रयोग में सतर्कता आवश्यक है। अनेक कारटेशीयन एवं न्यूटोनीयन भ्रान्तियाँ जो विशेष कर देश एवं काल संबंधी है इसी कारण से उत्पन्न हुई हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

2. राइल कहते हैं कि 'वह वाक्यांश' को लेकर एक दूसरी भ्रामक स्थिति दार्शनिक गलत संरचना के कारण उत्पन्न होती है।

3. अन्ततः वे कहते हैं कि सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति का एक वर्ग 'वह वाक्यांश' है। ये तीनों ही सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियाँ एक ही प्रकार से किसी निश्चित दिशा में भ्रमित करती हैं। इसलिए उन्होंने इन तीनों को ही चुना। कुछ अन्य अभिव्यक्तियाँ भी हैं जो सुनियोजित भ्रमोत्पादक हैं, परन्तु यह भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण नहीं है केवल दार्शनिकों के लिए महत्वपूर्ण है।

इस लेख के अन्तर्गत राइल ने कुछ परिणामों को जो उत्पन्न हो सकते हैं उन्हें उठाया है।

1. एक निश्चित प्रकार के व्याकरणीय आकार की अभिव्यक्ति को एक निश्चित प्रकार के तार्किक आकार के तथ्य के लिए प्रस्तुत करना उपयुक्त हैं एवं केवल वे तथ्य, क्या यह व्याकरणीय गुण से तार्किक आकार का यह संबंध प्राकृतिक (Natural) या रूढ़िगत (Conventional) है?

   तथ्य समूह नहीं है? यहाँ तक कि यह व्यवस्थित समूह भी नहीं है जिस प्रकार अंशों से वाक्य एक व्यवस्था है, ध्वनि के समूह का, रेखा के समूहों का नक्शा एक व्यवस्था है। तथ्य कोई वस्तु नहीं है न ही व्यवस्थित वस्तु है। राइल के अनुसार यह संबंध जो व्याकरणीय गुण एवं तार्किक आकार के बीच है वह बजाए प्राकृतिक के रूढ़िगत के अधिक निकट है।

2. दूसरा प्रश्न उठता है कि किसी विशिष्ट परिस्थिति में यह कैसे खोजा जाएगा कि यह सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति है अथवा नहीं? राइल कहते हैं कि हेत्वाभास एवं विरोधाभास एक प्रमाण है जिससे यह जाना जाता है कि अभिव्यक्ति भ्रमोत्पादक है अथवा नहीं। वास्तव में इस प्रकार की अभिव्यक्तियों में कोई व्याघात नहीं होता है जैसे कि प्रायः समझा जाता है। जब तक कि ऐसी अभिव्यक्तियों का दार्शनिक रूप से प्रस्तुतिकरण नहीं किया जाता है तब तक यह निरर्थक कथन नहीं है। जब इसका कुछ भिन्न प्रकार शब्दाडम्बरपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, तब दार्शनिक विश्लेषण के समक्ष अमूर्तीकरण एवं सामान्यीकरण से उत्पन्न समस्याएँ आती हैं। प्राग-दार्शनिक अमूर्त वस्तु सदैव सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियों से दिग्भ्रमित होते हैं एवं यहाँ तक कि अमूर्त चिन्तन के जाल में दार्शनिक फँस जाते हैं जिससे या जिस रोग से मुक्ति दिलाना उसका सही कार्य होता है वह स्वयं इसके शिकार हो जाते हैं।

3. राइल कहते हैं कि एक समस्या यह उत्पन्न होती है कि किस प्रकार सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्तियों को वर्गीकृत किया जाए या इनकी

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

एक सर्वांगीण सूची किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है? वे कल्पना करते हैं कि सैद्धान्तिक रूप से इनकी संख्या असीम है, परन्तु प्रचलित संख्या अपेक्षाकृत कम है।

4. यह भी एक समस्या है कि इसे कैसे प्रमाणित किया जाए कि यह अभिव्यक्ति किसी भी प्रकार से सुनियोजित भ्रमोत्पादक अभिव्यक्ति नहीं है? यदि इस समय यह प्रमाणित नहीं किया गया कि इस अभिव्यक्ति में विरोधाभास है, तो इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि इसके अन्दर विरोधाभास को कभी भी प्रमाणित नहीं किया जा सकेगा।

5. दर्शन के सुनियोजित ढँग से पुनः स्थापना करने का अभ्यास करना चाहिए। राइल कहते हैं कि इसका यह तात्पर्य नहीं है कि दर्शन भाषा शास्त्रीय या शाब्दिक आलोचना का विभाग है। पुनः स्थापना का अभ्यास ऐसा नहीं है कि एक संज्ञा को दूसरी संज्ञा के स्थान पर प्रतिस्थापित करें या एक क्रिया को दूसरी क्रिया के स्थान पर प्रतिस्थापित करने का अभ्यास किया जाए। इसकी पुनः स्थापना करने में वाक्य-विन्यास का स्थानान्तरण केवल इस दृष्टि से नहीं किया जाना चाहिए कि वह आकर्ष लगे, अपितु वाक्य विन्यास का रूपान्तरण इस प्रकार से करना होता है जिसके लिए दर्शन की एक खोज है कि ये वाक्य विन्यास तथ्यों को प्रदर्शित कर सकें। अपने लेख के अन्त में राइल कहते हैं कि दार्शनिकों को उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर खोज करना चाहिए कि वास्तव में यह कहने का क्या अर्थ है कि अमुक का क्या तात्पर्य है? यह एक दार्शनिक विश्लेषण है एवं यही दर्शन का कार्य है।

Scanned by TapScanner